Yojna IAS
C-32 Noida Sector-02
Uttar Pardesh (201301)
Contact No. +8595907569

CURRENT AFFAIRS

Date – 25 May 2022

राजा राम मोहन राय

- हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने राजा राम मोहन राय की **250**वीं जयंती पर उनकी याद में साल भर चलने वाले उत्सव के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया।
- उद्घाटन समारोह कोलकाता में 'राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन', साल्ट लेक और साइंस सिटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था।
- यह एक साल का त्योहार है जो अगले साल **(22** मई, **2023)** तक मनाया जाएगा।

Yojna IAS

- इस वर्ष राजा राम मोहन राय की 250वीं जयंती और 'राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान' का 50वां स्थापना दिवस भी है।
- संस्कृति मंत्रालय ने राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन में राजा राम मोहन राय की एक प्रतिष्ठित प्रतिमा का अनावरण भी किया है।

राजा राम मोहन राय:

- राजा राम मोहन राय आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के जनक और एक अथक समाज सुधारक थे जिन्होंने भारत में प्रबुद्धता और उदार सुधारवादी आधुनिकीकरण के युग की शुरुआत की।
- राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल के राधानगर में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- राजा राम मोहन राय की प्रारंभिक शिक्षा फ़ारसी और अरबी भाषाओं में पटना में हुई, जहाँ उन्होंने कुरान, सूफी रहस्यवादी कवियों की कृतियों और प्लेटो और अरस्तू की पुस्तकों के अरबी संस्करणों का अध्ययन किया।
- उन्होंने बनारस में संस्कृत भाषा, वेदों और उपनिषदों का भी अध्ययन किया।
- 1803 से 1814 तक, उन्होंने वुडफोर्ड और डिग्बी के अधीन ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए एक निजी दीवान के रूप में काम किया।
- वर्ष 1814 में उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए कलकत्ता चले गए।
- नवंबर 1830 में, वह सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने से उत्पन्न संभावित अशांति का मुकाबला करने के उद्देश्य से इंग्लैंड के लिए रवाना हुए।
- राम मोहन राय दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर द्वितीय की पेंशन से संबंधित शिकायतों के लिए इंग्लैंड गए, जब उन्हें अकबर द्वितीय द्वारा 'राजा' की उपाधि दी गई।

Yojna IAS

- टैगोर ने अपने संबोधन में राम मोहन राय को 'भारतीय इतिहास का एक चमकता सितारा' कहा, जो भारत में आधुनिक युग का उदघाटक है।

विचारधारा:

- राम मोहन राय पश्चिमी आधुनिक विचारों से काफी प्रभावित थे और उन्होंने तर्कवाद और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर जोर दिया।
- राम मोहन राय की तात्कालिक समस्या उनके मूल बंगाल का धार्मिक और सामाजिक पतन था।
- उनका मानना था कि धार्मिक रूढ़िवादिता सामाजिक जीवन को नुकसान पहुँचाती है और समाज की स्थिति को सुधारने के बजाय लोगों को और परेशान करती है।
- राजा राम मोहन राय का मानना था कि सामाजिक और राजनीतिक आधुनिकीकरण केवल धार्मिक सुधार के दायरे में आता है।
- राम मोहन राय का मानना था कि प्रत्येक पापी को अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए और यह प्रायश्चित आत्म-शुद्धि और पश्चाताप के माध्यम से किया जाना चाहिए, न कि धूमधाम और अनुष्ठानों के माध्यम से।
- वह सभी मनुष्यों की सामाजिक समानता में विश्वास करते थे और इस प्रकार जाति व्यवस्था के प्रबल विरोधी थे।
- राम मोहन राय इस्लामी एकेश्वरवाद की ओर आकर्षित थे। उन्होंने कहा कि एकेश्वरवाद भी वेदांत का मूल संदेश है।
- उन्होंने एकेश्वरवाद को हिंदू धर्म और ईसाई धर्म के बहुदेववाद की ओर एक सुधारात्मक कदम माना। उनका मानना था कि एकेश्वरवाद ने मानवता के लिए एक सार्वभौमिक मॉडल का समर्थन किया।
- राजा राम मोहन राय का मानना था कि जब तक महिलाओं को निरक्षरता, बाल विवाह, सती प्रथा जैसे अमानवीय रूपों से मुक्त नहीं किया जाएगा और हिंदू समाज प्रगति नहीं कर सकता है।

Yojna IAS

- उन्होंने सती प्रथा को प्रत्येक मानव और सामाजिक भावना के उल्लंघन के रूप में और एक जाति के नैतिक पतन के लक्षण के रूप में चित्रित किया।

योगदान:

धार्मिक सुधार:

- राजा राम मोहन राय का पहला प्रकाशन तुहफत-उल-मुवाहिदीन (ए गिफ्ट टू द गॉड्स) वर्ष **1803** में आया, जिसने हिंदुओं की तर्कहीन धार्मिक मान्यताओं और भ्रष्ट प्रथाओं को उजागर किया।
- वर्ष **1814** में उन्होंने मूर्ति पूजा, जातिगत कठोरता, अर्थहीन कर्मकांडों और अन्य सामाजिक बुराइयों का विरोध करने के लिए कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना की।
- उन्होंने ईसाई धर्म के रीति-रिवाजों की आलोचना की और यीशु को भगवान के अवतार के रूप में खारिज कर दिया। प्रिस्ट्स ऑफ जीसस **(1820)** में, उन्होंने नए नियम के नैतिक और दार्शनिक संदेश को अलग करने की कोशिश की, जो चमत्कारिक कहानियों के माध्यम से दिया गया था।

समाज सुधार:

- राजा राम मोहन राय ने सुधारवादी धार्मिक संघों को सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखा।
- उन्होंने वर्ष **1815** में आत्मीय सभा, वर्ष **1821** में कलकत्ता यूनिटेरियन एसोसिएशन और वर्ष **1828** में ब्रह्म सभा (जो बाद में ब्रह्म समाज बन गई) की स्थापना की।
- उन्होंने जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, अंधविश्वास और नशीली दवाओं के प्रयोग के खिलाफ अभियान चलाया।
- वह महिलाओं की स्वतंत्रता और विशेष रूप से सती और विधवा पुनर्विवाह के उन्मूलन पर अपने अग्रणी विचारों और कार्यों के लिए जाने जाते थे।

Yojna IAS

- उन्होंने बाल विवाह, महिलाओं की निरक्षरता और विधवाओं की अपमानजनक स्थिति का विरोध किया और महिलाओं के लिए विरासत और संपत्ति के अधिकार की मांग की।

शैक्षिक सुधार:

- राम मोहन राय ने देशवासियों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार करने के लिए बहुत प्रयास किए। उन्होंने 1817 में एक हिंदू कॉलेज की स्थापना के लिए डेविड हेयर के प्रयासों का समर्थन किया, जबकि रॉय के अंग्रेजी स्कूल ने यांत्रिकी और वोल्टेयर के दर्शन को पढ़ाया।
- वर्ष 1825 में, उन्होंने वेदांत कॉलेज की स्थापना की जहां भारतीय शिक्षण और पश्चिमी सामाजिक और भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम दोनों पढ़ाए जाते थे।

आर्थिक और राजनीतिक सुधार:

नागरिक स्वतंत्रता:

- राम मोहन राय ब्रिटिश संवैधानिक शासन प्रणाली द्वारा लोगों को दी जाने वाली नागरिक स्वतंत्रताओं से बहुत प्रभावित हुए और उनकी प्रशंसा की। वह सरकार की उस प्रणाली के लाभों को भारतीय लोगों तक पहुंचाना चाहते थे।

प्रेस की स्वतंत्रता:

- लेखन और अन्य गतिविधियों के माध्यम से, उन्होंने भारत में स्वतंत्र प्रेस के आंदोलन का समर्थन किया।
- वर्ष 1819 में, लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा प्रेस सेंसरशिप जारी की गई, राम मोहन राय की तीन पत्रिकाएँ हैं – ब्राह्मणवादी पत्रिका (वर्ष 1821); बंगाली साप्ताहिक – संवाद कौमुदी (वर्ष 1821) और फारसी साप्ताहिक – मिरात-उल-अकबर प्रकाशित।

Yojna IAS

कराधान सुधार:

- राम मोहन राय ने बंगाली जमींदारों की दमनकारी प्रथाओं की निंदा की और न्यूनतम लगान तय करने की मांग की। उन्होंने कर मुक्त भूमि और करों को समाप्त करने की भी मांग की।
- उन्होंने विदेशों में भारतीय सामानों पर निर्यात शुल्क में कमी और ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक अधिकारों को समाप्त करने का आह्वान किया।

प्रशासनिक सुधार:

- उन्होंने बेहतर सेवाओं के भारतीयकरण और कार्यपालिका को न्यायपालिका से अलग करने की मांग की। उन्होंने भारतीयों और यूरोपीय लोगों के बीच समानता की मांग की।

Swadeep Kumar

Yojna IAS

इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना

इंदिरा गांधी शहरी
रोजगार गारंटी योजना

- राजस्थान सरकार ने अपनी बहुप्रचारित इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत शामिल नौकरियों के बारे में विवरण जारी किया है।
- राजस्थान सरकार ने अपने बजट भाषण में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए मनरेगा की तर्ज पर शहरी क्षेत्रों के लिए रोजगार योजना की घोषणा की थी।
- मनरेगा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार प्रदान करता है, जबकि इसके तहत स्ट्रीट वेंडरों के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में ढाबों और रेस्तरां में काम करने वालों के लिए कोई प्रावधान नहीं था।

योजना:

- योजना के तहत शहरी क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों को हर साल 100 दिन का रोजगार प्रदान किया जाएगा।
- "सामान्य प्रकृति" के श्रम कार्यों के लिए सामग्री की लागत और भुगतान का अनुपात 25:75 के अनुपात में होगा, जबकि विशेष कार्यों के लिए यह अनुपात 75:25 होगा।
- इसके तहत ज्यादा से ज्यादा रोजगार उपलब्ध कराने पर जोर दिया जा रहा है|
- दूसरी ओर, एक संपत्ति के निर्माण के लिए एक उच्च भौतिक घटक की आवश्यकता होगी, इसलिए 'विशेष कार्य' के तहत अनुपात 75:25 है।

पात्रता:

- शहरी निकाय सीमा के भीतर रहने वाले 18 से 60 वर्ष के आयु वर्ग के सभी लोग योजना के लिए पात्र हैं और प्रवासी श्रमिकों को विशेष परिस्थितियों जैसे महामारी या आपदा में कवर किया जा सकता है।

Yojna IAS

संघटक:

पर्यावरण संरक्षण:

- सार्वजनिक स्थानों पर वृक्षारोपण, पार्कों का रखरखाव, फुटपाथ और डिवाइडर पर पौधों की सिंचाई, शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी), वन, बागवानी और कृषि विभागों के तहत नर्सरी तैयार करना।

जल संरक्षण:

- तालाबों, झीलों, बावड़ियों आदि की सफाई और सुधार के लिए वर्षा जल संचयन संरचनाओं के निर्माण, मरम्मत और सफाई और जल स्रोतों के जीर्णोद्धार का कार्य कोई भी कर सकता है।

स्वच्छता और स्वच्छता से संबंधित कार्य:

- इसमें ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, घर-घर कचरा संग्रहण और पृथक्करण सहित श्रम कार्य, डंपिंग स्थलों पर कचरे को अलग करना, सार्वजनिक/सामुदायिक शौचालयों की सफाई और रखरखाव, सीवरों/नालियों की सफाई के साथ-साथ निर्माण से उत्पन्न अपशिष्ट शामिल हैं। विध्वंस में हटाने के कार्य शामिल हैं।

संपत्ति के विरूपण से संबंधित अधिनियम:

- इसमें अतिक्रमण हटाने के श्रम कार्य के साथ-साथ अवैध बोर्ड/होर्डिंग/बैनर आदि के साथ-साथ डिवाइडर, रेलिंग, दीवारों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित पेंटिंग शामिल हैं।

अभिसरण:

- इस योजना के तहत उन लोगों को अन्य केंद्रीय या राज्य स्तर की योजनाओं में नियोजित किया जा सकता है जिनमें पहले से ही भौतिक घटक हैं और श्रम कार्य की आवश्यकता है।

Yojna IAS

सेवा:

- इस में नागरिक निकायों, रिकॉर्ड रखरखाव आदि के कार्यालयों में गोशालस और 'मल्टीटास्क सेवाओं' में श्रम कार्य शामिल है इसके अलावा, विरासत संरक्षण से संबंधित कार्यों को भी शामिल किया गया है।
- विविध कार्य, जैसे सुरक्षा/बाड़ लगाना/चारदीवारी/नगरीय निकायों और सार्वजनिक भूमि की सुरक्षा से संबंधित कार्य, शहरी निकायों की सीमा के भीतर पार्किंग स्थलों का विकास और प्रबंधन, आवारा पशुओं का कब्जा और प्रबंधन आदि।

शहरी क्षेत्रों के लिए सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता:

अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदानकर्ता:

- शहरी क्षेत्र देश की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। अधिकांश देशों की तरह, भारत के शहरी क्षेत्र भी देश की अर्थव्यवस्था में बहुत योगदान करते हैं।
- भारतीय शहर आर्थिक उत्पादन में लगभग दो-तिहाई का योगदान करते हैं, जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा बनाते हैं और एफडीआई की मुख्य प्राप्ति हैं। वे नवाचार और प्रौद्योगिकी के प्रवर्तक भी हैं।

व्यवसायों के लिए हॉटस्पॉट:

- शहर विविध प्रकार की आर्थिक गतिविधियों के लिए सामूहिक हॉटस्पॉट का दर्जा भी रखते हैं।
- स्केलेबल और भीड़भाड़ वाले लाभों (शैक्षिक सुविधाओं की आपूर्ति, आपूर्तिकर्ताओं की उपस्थिति आदि) के परिणामस्वरूप, शहर अधिक व्यवसाय और लोगों को आकर्षित करते हैं।

Yojna IAS

सामाजिक पूंजी का केंद्र:

- शहर सामाजिक पूंजी के केंद्र हैं। वे सांस्कृतिक या सामाजिक रूप से विविध समूहों या अलग-अलग विचारों पर चर्चा के केंद्र के 'मिलन स्थल' भी होते हैं।

पावर सेंटर:

- शहर लगातार बढ़ती शक्ति के केंद्र हैं, जो कस्बों और गांवों की कीमत पर अपनी स्थिति को मजबूत करते हैं।

शहरी रोजगार योजनाओं का महत्व:

- ग्रामीण गरीबों के आजीविका आधार को मजबूत करके सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करता है।
- यह शहरी निवासियों को काम करने का वैधानिक अधिकार देता है और इस तरह संविधान के तहत गारंटीकृत जीवन के अधिकार को सुनिश्चित करता है (अनुच्छेद 21)।
- उदाहरण- मध्य प्रदेश में नई राज्य सरकार ने "युवा स्वाभिमान योजना" शुरू की है।
- यह शहरी युवाओं के बीच कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है और बेरोजगारी की चिंताओं को दूर करता है।
- इस तरह के कार्यक्रम कस्बों में बहुत जरूरी सार्वजनिक निवेश ला सकते हैं, जो बदले में स्थानीय मांग को बढ़ावा दे सकते हैं, शहरी बुनियादी ढांचे और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, शहरी आमों को बहाल कर सकते हैं और शहरी युवाओं को सशक्त बना सकते हैं। यूएलबी की क्षमता को प्रशिक्षित और बढ़ा सकते हैं।

Swadeep Kumar

Yojna IAS

वाइल्ड पोलियो वायरस

- मोजाम्बिक में, इस सप्ताह देश में एक बच्चे के इस रोग से संक्रमित होने के बाद 'वाइल्ड पोलियोवायरस टाइप 1' के पहले मामले की पुष्टि हुई है।
- 1992 के बाद से मोजाम्बिक में इस बीमारी का यह पहला मामला है और इस साल दक्षिण पूर्व अफ्रीका में 'वाइल्ड पोलियोवायरस' का दूसरा आयातित मामला है।
- इस साल की शुरुआत में, दक्षिण पूर्व अफ्रीका के 'मलावी' देश में इस बीमारी के फैलने की सूचना मिली थी।
- **नोट:** अब तक 'वाइल्ड पोलियो वायरस' (स्थानिक) केवल अफगानिस्तान और पाकिस्तान में पाया जाता था।

'पोलियो' क्या है?

- पोलियो या पोलियोमाइलाइटिस को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा 'अत्यधिक संक्रामक वायरल रोग' के रूप में परिभाषित किया गया है। यह रोग मुख्य रूप से छोटे बच्चों को प्रभावित करता है।

संचरण:

- पोलियो वायरस मुख्य रूप से मल मार्ग या अन्य सामान्य वाहकों (जैसे दूषित पानी या भोजन) के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

Yojna IAS

- आंतों में पहुंचकर इस वायरस की संख्या कई गुना बढ़ जाती है और वहां से यह तंत्रिका तंत्र में पहुंचकर लकवा का कारण बनता है।

किसी देश को पोलियो मुक्त कब घोषित किया जाता है?

- 'पोलियो विषाणु' तीन प्रकार के होते हैं, जिनकी संख्या 1 से 3 होती है। किसी देश को पोलियो मुक्त घोषित करने के लिए, तीनों प्रकार के विषाणुओं के अनियंत्रित संचरण को रोकना अनिवार्य है।
- इसके अलावा, 'पोलियो उन्मूलन' के लिए, जंगली और टीके से प्राप्त पोलियो संक्रमण दोनों को शून्य तक कम करना होगा।
- तीन साल तक वायरस का कोई सबूत मिलने के बाद जनवरी 2014 में भारत को पोलियो मुक्त घोषित कर दिया गया। इस उपलब्धि को व्यापक रूप से सफल 'पल्स पोलियो अभियान' से प्रेरित माना जाता है।

इस संबंध में भारत के प्रयास:

- भारत में पोलियो वायरस के संचरण को रोकने के लिए, पल्स पोलियो कार्यक्रम के तहत, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने देश में किसी भी पोलियो के प्रकोप से निपटने के लिए 'रैपिड रिस्पांस टीम' का गठन किया है।
- सरकार ने मार्च 2014 से भारत और पोलियो प्रभावित देशों जैसे अफगानिस्तान, नाइजीरिया, पाकिस्तान, इथियोपिया, केन्या, सोमालिया, सीरिया और कैमरून के बीच यात्रा करने वालों के लिए मौखिक पोलियो टीकाकरण (ओपीवी) अनिवार्य कर दिया है।

Swadeep Kumar

Yojna IAS